ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 6, Issue 11, November 2017

गदर पार्टी की असफलता 1911 से 1915: एक ऐतिहासिक अध्ययन

Dr. Abhinandan Swaroop

M.J.P. Rohilkhand University, Bareilly, Uttar Pradesh, India

सार

ग़दर पार्टी भारत को अंग्रेज़ों की पराधीनता से मुक्त कराने के उद्देश्य से बना एक संगठन था। इसे अमेरिका और कनाडा के भारतीयों ने 15 जूलाई 1913 सैन फ्रांसिस्को नगर में बनाया था। इसे प्रशान्त तट का हिन्दी संघ (Hindi Association of the Pacific Coast) भी कहा जाता था। यह पार्टी "हिन्दुस्तान ग़दर" नाम का पत्र भी निकालती थी जो उर्दू और पंजाबी में छपता था। इस संगठन ने भारत को अनेक महान क्रांतिकारी दिए। ग़दर पार्टी के महान नेताओं सोहन सिंह भाकना, करतार सिंह सराभा, लाला हरदयाल आदि ने जो कार्य किये, उसने भगत सिंह जैसे क्रांतिकारियों को उत्प्रेरित किया। पहले महायुद्ध के छिड़ते ही जब भारत के अन्य दल अंग्रेज़ों को सहयोग दे रहे थे, गदर पार्टी के लोगों ने अंग्रेजी राज के विरुद्ध जंग घोषित कर दी। उनका मानना था-

> सुरा सो पहचानिये, जो लड़े दीन के हेत।
> पुर्जा-पुर्जा कट मरे, कभूं न छाड़े खेत॥

ग़दर पार्टी का जन्म अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को के एस्टोरिया में 1913 में अंग्रेज़ी साम्राज्य को जड़ से उखाड़ फेंकने के उद्देश्य से हुआ। गदर पार्टी के संस्थापक अध्यक्ष सरदार सोहन सिंह भाकना थे। इसके अतिरिक्त केसर सिंह थथगढ - उपाध्यक्ष, लाला हरदयाल - महामंत्री, लाला ठाकुर दास धुरी - संयुक्त सचिव और पण्डित कांशी राम मदरोली - कोषाध्यक्ष थे।स्थापना के बाद गदर पार्टी की पहली बैठक सैक्रामेंटो, कैलिफ़ोर्निया में दिसम्बर 1913 में आयोजित की गयी। इसमें कार्यकारिणी के सदस्यों की घोषणा भी की गयी, जो कि इस प्रकार है-

करतार सिंह सराभा, संतोख सिंह, अरूण सिंह, पृथी सिंह, पण्डित जगत राम, करम सिंह चीमा, निधान सिंह चुघ, संत वसाखा सिंह, पण्डित मुंशी राम, हरनाम सिंह कोटला, नोध सिंह थे। गुप्त और भूमिगत कार्यों के लिए एक कमेटी बनायी गयी जिसमें सोहन सिंह भाकना, संतोख सिंह सदस्य थे।

परिचय

ग़दर पार्टी की पहली सभा के विचार थे कि अंग्रेज़ी राज के विरुद्ध हथियार उठाना गद्दारी नहीं, महायुद्ध है। हम इस विदेशी राज के आज्ञाकारी नहीं, घोर दुश्मन हैं। हमारी इसी दुश्मनी को अंग्रेज गद्दरी कहते हैं। इसीलिए वे हमारी 1857 की आज़ादी की जंग को ग़दर कहते आ रहे हैं।[1,2]

ग़दरियों को कोलम्बिया नदी (अमेरिका) के किनारे के भारतीय मज़दूरों में काम शुरू किया। गदर पार्टी ने 15 जूलाई 1913 को असटेरिया की आरा मिलों में एक बुनियादी प्रस्ताव पास किया जिसके तहत कहा गया कि गदर पार्टी हथियारबंद क्रांति की मदद से अंग्रेज़ी राज से भारत को आज़ाद कर गणतंत्र कायम करेंगी। ध्यान देने योग्य है कि यह प्रस्ताव भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने 16 साल बाद 1929 में जवाहरलाल नेहरू के बहुत दबाव के बाद लाहौर में पास किया था। सभा में हर वर्ष चुनाव करने का निर्णय लिया। साथ ही यह भी तय किया गया कि इसमें कोई धार्मिक बहस नहीं होगी। धर्म को एक निजी मामला समझा गया था। हर समुदाय प्रत्येक माह एक डॉलर चंदा देगा, ग़दर का अक्ख़बार हिंदी, पंजाबी और उर्दू में निकाला जाएगा।

गदर पार्टी ने अपना पत्र "हिन्दुस्तान ग़दर" निकाला जिसमें ब्रितानी हकुमत का खुला विरोध किया गया। यह पत्र हिन्दी, पंजाबी, उर्दू और अन्य भारतीय भाषाओं में छापा जाता था। "युगान्तर आश्रम" ग़दर पार्टी का मुख्यालय था। यहीं से ग़दर पार्टी ने एक पोस्टर छापा था जिसे पंजाब में जगह-जगह चिपकाया भी गया था। इस पोस्टर पर लिखा था - "जंग दा होका" अर्थात

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 6, Issue 11, November 2017

युद्ध की घोषणा। ग़दर के नेताओं ने निर्णय लिया कि अब वह समय आ गया है कि हम ब्रितानी सरकार के ख़िलाफ़ उसकी सेना में संगठित विद्रोह कर सकते हैं। क्योंकि तब प्रथम विश्वयुद्ध धीरे-धीरे क़रीब आ रहा था और ब्रितानी हकुमत को भी सैनिकों की बहुत आवश्यकता थी। नेतृत्व ने भारत वापिस आने का निर्णय लिया।[3,4]

गदर क्रांतिकारियों में अधिकतर वे पंजाबी प्रवासी थे जो 1904 के बाद उत्तरी अमरीका के पश्चिमी तट पर जाकर बस गये थे। इनमें अधिकतर कर्ज के बोझ तले दबे, पंजाब के ज़मीन के लिए इच्छुक किसान थे इनमें विशेषकर जालंधर और होशियारपुर इलाके के किसान थे। इनमें से बहुत से ब्रिटिश भारतीय फौज में नौकरी कर चुके थे। इससे उनमें प्रवास के लिए आवश्यक विश्वास पैदा हो गया था और उनके पास उसके लिए पर्याप्त साधन भी थे।

स्थानीय लोगों के विद्वेषपूर्ण रवैये जिसमें गोरे मजदूरों की यूनियनें भी शामिल थीं, प्रतिबंधक प्रवासी नियमों जिनमें भारत सचिव की मिलीभगत शामिल थी, इन सब ने भारतीय समुदाय को अहसास दिला दिया कि यदि उन्हें अपने विरुद्ध नस्लवादी भेदभाव का मुकाबला करना है तो उन्हें स्वयं को संगठित करना होगा। उदाहरण के लिए, एक भारतीय विद्यार्थी तारक नाथ दास जो उत्तरी अमरीका में भारतीय समुदाय के आरंभिक नेताओं में से था और जिसने फ्री हिन्दस्तान नामक अखबार भी शरू किया था, यह अच्छी तरह जान गया था कि ब्रिटिश सरकार भारतीय मज़दूरों को फीजी में तो काम करने को प्रोत्साहित कर रही थी क्योंकि वहाँ के ज़मींदारों को मजदूरों की आवश्यकता थी लेकिन वह उत्तरी अमरीका में भारतीयों के । प्रवास को हतोत्साहित कर रही थी क्योंकि उसे डर था कि वे वहाँ आज़ादी के वर्तमान विचारों से प्रभावित हो जायेंगे।[5,6]

प्रवासी भारतीय समुदाय में राजनैतिक गतिविधि की हलचल 1907 में ही शुरू हो गई जब रामनाथ परी नामक एक राजनैतिक प्रवासी ने सर्कलर-ए-आज़ादी नामक पर्चा छापा जिसमें उसने स्वदेशी आंदोलन की सहायता का वचन दिया था। तारक नाथ दास ने फ्री हिन्दुस्तान निकालना शरू किया और जी.डी. कमार ने स्वदेश सेवक नामक पत्र गरुमुखी में निकाला जिसमें उसने सामाजिक सुधारों की हिमायत की और हिन्दुस्तानी सिपाहियों को बगावत करने का सुझाव दिया।[7,8]
1910 तक दास और कुमार ने सियैटल (अमरीका) में युनाइटेड इंडिया हाउस की स्थापना कर ली जहाँ वे हर हफ्ते हिन्दुस्तानी मज़दूरों के गुटों को भाषण दिया करते थे। उन्होंने खालसा दीवान सोसायटी के साथ भी घनिष्ट संबंध स्थापित किये जिसके फलस्वरूप 1913 में लंदन में कोलोनियल सैक्रेट्री और भारत में वायसराय तथा अन्य अफसरों से मिलने के लिए एक शिष्टमंडल भेजने का फैसला किया गया। एक महीना इंतज़ार करने के बाद भी वे कोलोनियल सैक्रेट्री से मिलने में सफल नहीं हो सके लेकिन पंजाब में वे लेफ़्टीनेंट गवर्नर और वायसराय से मिलने में सफल हो गये। पंजाब में उनकी यात्रा के दौरान पंजाब के विभिन्न शहरों में बहुत-सी जन-सभायें आयोजित की गईं। जनता तथा अख़बारों से बहुत सहायता मिली।
इसी बीच 1913 के शुरू में हाँगकाँग में मलाया प्रदेशों में काम करने वाले एक सिक्ख पुजारी भगवान सिंह कनाडा में बैंकूवर शहर गये और खुलेआम ब्रिटिश शासन के खिलाफ हिंसक बगावत करने का प्रचार किया। उनके प्रचार का इतना प्रभाव पड़ा कि उन्हें तीन महीने बाद कनाडा से निकल जाने को कहा गया लेकिन उनके विचारों ने श्रोताओं में नयी चेतना जगा दी थी।[9,10]
ब्रिटिश भारतीय सरकार के रवैये से हताश होकर, उत्तरी अमरीका के भारतीय समुदाय को लगा कि विदेशों में उनकी घटिया स्थिति का कारण उनका एक गुलाम देश का नागरिक होना है। लगातार राजनैतिक संघर्षों, राष्ट्रीय चेतना और भाईचारे की भावना के फलस्वरूप उत्तरी अमरीका के इस समुदाय को एक केंद्रीय संगठन एवं नेता की आवश्यकता महसूस हई।

यह नेता उन्हें लाला हरदयाल के रूप में मिला। जो 1911 में राजनैतिक प्रवासी के रूप में अमरीका आये थे और स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में तथा अमरीकी बुद्धिजीवियों, उग्रवादियों तथा मज़दरों को अराजकतावादी तथा श्रमिकसंघवादी आंदोलनों के बारे में भाषण दिया करते थे लेकिन जिन्होंने भारतीय प्रवासियों के जीवन में अधिक रुचि नहीं दिखाई थी। दिसम्बर 1912 में दिल्ली में वाइसराय पर बम द्वारा हमले की खबर से उनके व्यवहार में परिवर्तन आया क्योंकि उन्हें लगा कि क्रांतिकारी भावना अभी जीवित थी।
उन्होंने भारतीय प्रवासी समुदाय का नेतृत्व संभाल लिया तथा मई 1913 में पोर्टलैंड में हिन्दी एसोसियेशन की स्थापना से एक केंद्रीय संगठन की आवश्यकता भी पूरी हो गई। बाद में इस संगठन का नाम बदल कर हिन्दुस्तान गदर पार्टी रख दिया गया। इसकी पहली मीटिंग में बाबा सोहन सिंह भाकना इसके अध्यक्ष चुने गये और लाला हरदयाल जरनल सेक्रेटरी तथा पंडित काशी राम मरोली इसके कोषाध्यक्ष बने। इस मीटिंग में अन्य लोगों के अलावा भाई परमानन्द तथा हरनाम सिंह "टुंडीलाट" ने भी भाग लिया था। 10,000

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 6, Issue 11, November 2017

डालर की रकम भी वहीं जमा कर ली गई और फैसला किया गया कि सैन फ्रांसिस्कों में युगान्तर आश्रम नाम से एक मुख्यालय की स्थापना की जायेगी और गदर नामक एक साप्ताहिक अखबार निकाला जायेगा जो मुफ्त बाँटा जायेगा।[11,12]

विचार-विमर्श

राजनैतिक कार्यवाही की योजना लाला हरदयाल द्वारा सुझाई गई थी और इसे हिन्दी . ऐसोसियेशन ने स्वीकार किया था, यह योजना इस समझ पर आधारित थी कि ब्रिटिश शासन को केवल हथियारबंद विद्रोह द्वारा ही उखाड़ फेंका जा सकता था और ऐसा करने के लिए आवश्यक था कि बड़ी संख्या में भारतीय प्रवासी भारत जायें और यह संदेश जनता तथा हिन्दुस्तानी फौज के सिपाहियों तक पहुँचायें। लाला हरदयाल यह भी मानते थे कि अमरीका में मिली आज़ादी को अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने में इस्तेमाल किया जाना चाहिए, अमरीकियों के विरुद्ध नहीं क्योंकि विदेश में रहने वाले हिन्दुस्तानियों को तब तक बराबरी का दर्जा नहीं मिल सकता था जब तक कि वे अपने ही देश में स्वतंत्र नहीं हो जाते।

इस समझ को स्वीकार करते हुए राष्ट्रवादियों ने एक जबर्दस्त अभियान छेड़ दिया और जिन फैक्ट्रियों और फार्मों पर हिन्दुस्तानी प्रवासी काम करते थे उनका दौरा करने लगे।[13,14]

पहली नवम्बर 1913 को गदर अखबार की शुरुआत की गई; पहला अंक उर्दू में छपा लेकिन एक महीने बाद उसका गुरुमुखी अंक भी आ गया। गदर अखबार की रूपरेखा राष्ट्रवाद के संदेश को सीधे-सादे लेकिन प्रभावशाली शब्दों में व्यक्त करने के हिसाब से तैयार की गई थी। उसके नाम का ही अर्थ था विद्रोह ताकि उसकी मंशा के बारे में किसी प्रकार का संदेह न रहे। उसके ऊपर "अंग्रेजी राज का दुश्मन" छपा हुआ था। इसके अलावा, हरं अंक के मुखपृष्ठ पर "अंग्रेजी राज का कच्चा चिट्ठा' छपता था जिसमें अंग्रेज़ी शासन के 14नकारात्मक प्रभावों का विवरण रहता था। चिट्ठा वास्तव में अंग्रेज़ी शासन की समस्त आलोचना का सारांश था जिसमें भारतीय संपत्ति की लूट, ज़मीन के ऊँचे लगान, प्रति व्यक्ति ।[15]
निम्न आय, लाखों भारतीयों की जान लेने वाले अकाल का बार-बार पड़ना, फौज पर लम्बे-चौड़े खर्च, स्वास्थ्य पर नगण्य खर्च तथा हिन्द-मसलमानों को लड़वा कर "विभाजन और शासन" की नीति आदि का ज़िक्र रहता था। चिट्ठे की आखिरी दो बातें इस सबके ममाधान की ओर यह कह कर संकेत करती थीं कि करोड़ों भारतीयों के मुकाबले में हिन्दस्तान में मौजद अंग्रेजों की संख्या बहत ही कम थी और 1857 के पहले विद्रोह के बाद छप्पन वर्ष बीत गये थे और एक अन्य विद्रोह के लिए समय आ गया था।

गदर जिसका प्रसार उत्तरी अमरीका के भारतीय प्रवासियों में खूब था, जल्दी ही फिलिपाइन्स, हाँग-काँग, चीन, मालाया प्रदेशों, सिंगापुर, त्रिनिदाद तथा होंडूरस के प्रवासियों तक भी पहँचने लगा और इन केंद्रों में मौजूद हिन्दस्तानी सेनाओं में भी। इसे भारत भी भेजा जाता था। इसने प्रवासी समदायों में जबर्दस्त चेतना पैदा की तथा इसे पढ़ने और इसमें उठाये गये मुद्दों पर बहस के लिए कई वर्ग बनाये गये और चन्दे के ढेर लग गये। सबसे अधिक लोकप्रिय थीं इसमें छपने वाली कवितायें जिन्हें जल्दी ही गदर की गूंज नाम से संकलित किया गया। इन्हें भारतीयों के सम्मेलन में पढ़ा और गाया जाता था। इन कविताओं में क्रांतिकारी भावना तथा धर्मनिरपेक्षता का भाव भरा था जैसा कि नीचे की पंक्तियों से स्पष्ट है:
न पंडित की जरूरत है न मुल्ला की, न फ़रियाद, न प्रार्थना गीत गाना है इनसे डोलती है, नैया हमारी उठाओ तलवार लड़ने जाना है।[16,17]
गदर" ने पंजाबियों से अपील की कि वे 1857 के अपने अंग्रेज़ों की हिमायत की भूमिका का उधार अब उन्हें उखाड़ फेंकने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करके चुका दें। वे अंग्रेजों द्वारा बनाई गई वफादार सिपाहियों की अपनी छवि का भी खंडन करें और सिर्फ विद्रोही बनें। जिनका एकमात्र उद्देश्य स्वतंत्रा प्राप्त करना था। गदर का संदेश इतनी तेजी से घर कर गया कि स्वयं हरदयाल उन लोगों की तीव्र प्रतिक्रिया से चकित रह गये जो कुछ करने के लिए बेचैन थे।
1914 में घटी तीन मुख्य घटनाओं ने गदर आंदोलन की आगे की दिशा निर्धारित की, लाला हरदयाल की गिरफ्तारी, ज़मानत और स्विट्ज़रलैंड भाग जाना, कामागाटा मारू जहाज़ की यात्रा और प्रथम विश्वयुद्ध की शुरुआतः

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 6, Issue 11, November 2017

- मार्च 1914 में हरदयाल को गिरफ्तार कर लिया गया। संभवतः इसका सबसे महत्वपूर्ण कारण था ब्रिटिश सरकार का दबाव जो चाहती थी कि वे गदर आंदोलन के नेतृत्व से हट जायें लेकिन जो कारण बताया गया वह था, उनकी अराजकतावादी गतिविधियाँ। उन्हें जमानत पर छोड़ दिया गया और उनकी पार्टी ने फैसला किया कि वह ज़मानत से भाग कर स्विट्ज़रलैंड चले जायें।
- इस बीच, कनाडा के प्रवास कानूनों का उल्लंघन करने के लिए, जिनके अनुसार "सीधे अपने जहाज़ पर आने वालों" के सिवा सभी अन्य के आने पर प्रतिबंध था, सिंगापुर में रह रहे एक हिन्दुस्तानी कांट्रेक्टर गुरदित्त सिंह ने कामागाटा मारू नामक जहाज

क्रांतिकारी आंदोलन : गदर पार्टी तथा होम रूल लीग[18,19]

किराये पर लिया और पूर्वी तथा दक्षिण पूर्वी एशिया के विभिन्न भागों में रहने वाले 376 भारतीय यात्रियों को लेकर बैंकूवर के लिए रवाना हो गया। रास्ते में गदर पार्टी के कार्यकर्ता जहाज़ पर आते, भाषण देते तथा साहित्य बाँटते। उनके प्रवास की पूर्व सूचना मिलने पर बैंकूवर के प्रैस ने "बढ़ते हुए पूर्व के आक्रमण' की चेतावनी दे दी और अपने कानूनों को और कड़ा करके कनाडा की सरकार इस चुनौती का सामना करने को तैयार हो गई।
कनाडा पहुँचने पर, जहाज़ को बंदरगाह में जाने नहीं दिया गया तथा पुलिस ने उसकी घेराबंदी कर दी। बैंकूवर में "समुद्रतट समिति" जिसके नेता हुसैन रहीम, सोहन लाल पाठक और बलवन्तसिंह थे, के प्रयत्नों के बावजूद तथा अमरीका में बर्कातुल्ला, भगवान सिंह, रामचंद्र और सोहन सिंह भकना के शक्तिशाली अभियान के बावजद, कामागाटा मारू को कनाडा की जल सीमा के बाहर निकाल दिया गया। उसके जापान पहँचने से पहले प्रथम विश्व यद्ध छिड़ गया तथा ब्रिटिश सरकार ने ऐलान कर दिया कि जहाज़ के कलकत्ता पहुँचने से पहले किसी यात्री को उतरने नहीं दिया जायेगा।
वापसी की यात्रा में जिस बन्दरगाह पर भी यह जहाज पहँचा वहाँ भारतीय प्रवासियों में रोष की लहर दौड़ गई और ब्रिटिश विरोधी भावना बढ़ने लगी। जब जहाज़ कलकत्ता के पास ब्रज-बज नामक स्थान पर पहुँचा तो पुलिस के द्वेषपूर्ण रवैये के कारण संघर्ष हआ। इस संघर्ष में 18 यात्रियों की मत्य हो गई. 202 को गिरफ्तार कर लिया गया तथा बाकी भाग निकलने में सफल हो गये।

- तीसरी और सबसे महत्वपूर्ण घटना जिसने सारी परिस्थिति में एक नाटकीय परिवर्तन ला दिया वह थी तीसरे विश्वयुद्ध की शुरुआत। यही वह अवसर था जिसके इंतज़ार में गदरवादी तैयार बैठे थे ताकि अंग्रेजों की कठिनाइयों का परा लाभ उठाया जा सके। यह अवसर उनकी आशाओं से पहले ही आ गया। अभी उनकी तैयारी भी परी नहीं हई थी। फिर भी पार्टी के सक्रिय कार्यकर्ताओं की विशेष सभा हई और यह फैसला किया गया कि काम का समय आ गया था। यह विचार किया गया कि दल की सबसे बड़ी कमजोरी हथियारों की कमी थी जिसे हिन्दुस्तानी सिपाहियों को विद्रोह के लिए उकसा कर पूरा किया जा सकता था।

गदर पार्टी ने एक पत्र ऐलाने-जंग (युद्ध की घोषणा) जारी कर दिया जिसे विदेशों में रहने वाले भारतीयों में बाँटा गया। गदर के कार्यकर्ताओं ने लोगों में प्रोत्साहन जगाने के लिए यात्राएँ भी आरंभ कर दी कि वे हिन्दुस्तान लौट कर संगठित विद्रोह की तैयारी करें। परिणाम बहत ही उत्साहवर्धक था और भारी । संख्या में लोगों ने स्वयं को और अपनी सारी सम्पत्ति को राष्ट्र के नाम समर्पित करने की पेशकश की। इससे उत्साहित होकर गदर पार्टी ने हिन्दुस्तान चलने का आह्वान किया तथा 1914के पूर्वार्ध से क्रांतिकारियों के जत्थे विभिन्न रास्तों से होकर हिन्दुस्तान पहुँचने लगे।[20,21]

हिन्दुस्तान में प्रवेशाधिकार घुसपैठ के विरुद्ध एक नये अध्यादेश से युक्त होकर हिन्दुस्तानी सरकार ताक लगाये बैठी थी। लौटने वाले प्रवासियों की पूरी तरह जाँच-पड़ताल की गई और लौटने वाले लगभग 8000 में से 5000 को "सुरक्षित" मान कर बिना रोक-टोक के आने दिया गया। शेष में से कुछ को गाँवों में नज़रबंद कर दिया गया और काफी लोगों को हिरासत में ले लिया गया। फिर भी कुछ कट्टर कार्यकर्ता पंजाब पहुँचने में सफल हो गये।
पंजाब में सुरक्षित पहुँचने वालों में करतार सिंह सरापा नाम का एक नौजवान तथा बुद्धिमान विद्यार्थी भी था जिसने गदर पार्टी की सदस्यता अमरीका में प्राप्त की थी और जो गदर अखबार के निकालने में प्रमुख योगदान देता था। उसने तुरंत लौटने वाले प्रवासियों से सम्पर्क स्थापित करने, उन्हें संगठित करने का काम शुरू कर दिया। वह सभाएँ करने लगा तथा योजना बनाने के काम में जट गया। गदर कार्यकर्ता गाँवों के दौरे करके. पार्टी के पर्चे बाँट कर, मेलों में लोगों को संबोधित करके और अन्य कई प्रयत्नों द्वारा लोगों को विद्रोह के लिये प्रेरित करने लगे। लेकिन 1914 का पंजाब उनकी आशाओं से भिन्न था और लोग गदर द्वारा काल्पनिक विद्रोह के लिए तैयार नहीं थे। कार्यकर्ताओं को सरकार के वफ़ादार तत्वों के विरोध का भी सामना करना पड़ा जिसमें खालसा दीवान का प्रमुख

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 6, Issue 11, November 2017

भी शामिल था जिसने उन्हें तनखैया या पतित सिखों और अपराधी का दर्जा देकर सरकार द्वारा उन्हें दबाने के प्रयत्नों में पूरा सहयोग दिया।[22]

आम जनता में लोकप्रियता के अभाव से निराश होकर गदर क्रांतिकारियों ने दूसरा प्रयास सिपाहियों में अपना संदेश फैला कर उन्हें विद्रोह के लिये तैयार करने का किया। नवम्बर 1914के विद्रोह का प्रयत्न संगठन तथा केंद्रीय नेतृत्व के अभाव के कारण असफल हो गया। फरवरी 1915 में रास बिहारी बोस से सम्पर्क और उन्हें नेतृत्व तथा संगठन सौंप देने के बाद. एक अधिक संगठित प्रयत्न किया गया लेकिन यह भी असफल रहा क्योंकि सरकार संगठन में घुस-पैठ करके इससे पहले ही कार्रवाई कर ली थी। बोस बच निकलने में सफल हो गये लेकिन अन्य नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया और गदर आंदोलन को प्रभावशाली ढंग से दबा दिया गया।

परिणाम

इसके बाद दमन का जो दौर चला वह बहुत ही भयानक था : 42 लोगों को फाँसी की सज़ा सुनाई गई और अन्य को लंबी अवधि का कारावास दिया गया। इसके फलस्वरूप पंजाब में राष्ट्रवादी नेतृत्व की एक पूरी पीढ़ी की राजनैतिक हत्या कर दी गई। बर्लिन में रह रहे हिन्दस्तानी क्रांतिकारियों द्वारा जर्मन सहायता प्राप्त करने और विदेशों में भेजे गये हिन्दुस्तानी सिपाहियों में विद्रोह कराने के प्रयत्न भी असफल हुए। राजा महेन्द्र प्रताप और बर्कातुल्लाह द्वारा अफगानिस्तान के अमीर की मदद प्राप्त करने के प्रयत्नों में भी असफलता हाथ आई। इस प्रकार हिसक विद्रोह द्वारा अंग्रेजी शासन को उखाड़ फेंकने में सफलता शायद इन क्रांतिकारियों के भाग्य में लिखी ही नहीं थी। क्या इस कारण हम गदर आंदोलन को असफल मान सकते हैं? क्या हम कह सकते हैं कि हथियारबंद क्रांति संगठित करने और अंग्रेजों को बाहर निकाल फेंकने के अपने उद्देश्य में तुरंत सफल न होने के कारण उनके प्रयत्न पूरी तरह विफल हए? इस मापदण्ड से तो 1920-22, 1930-34 तथा 1942 के सभी बड़े आंदोलन असफल माने जायेंगे क्योंकि इनमें से कोई भी तुरंत स्वतंत्रता प्राप्त करने में सफल नहीं हुआ। लेकिन अगर सफलता का मापदण्ड राष्ट्रीय भावनाओं को आगे बढ़ाना, मुकाबला करने की नई परंपरायें बनाना, आंदोलन के नये तरीके ढूँढना तथा धर्म-निरपेक्षता, जनतंत्र तथा सत्रता की विचारधारा का प्रसार करना था तो भारत के स्वतंत्रता संग्राम में गदर आंदोलन की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी जायेगी।[21]
उपलब्धियाँ : गदर पार्टी के लोग राष्ट्रीय विचारधारा को लोकप्रिय बनाने में सफल हुए विशेषकर उपनिवेशवाद के मल्यांकन करने तथा इस समझ का प्रसार करने में कि हिन्दस्तान की गरीबी और पिछड़ेपन का मुख्य कारण अंग्रेज़ी शासन था। यह प्रसार उन्होंने देश तथा विदेश में रहने वाले भारतीयों में किया। उन्होंने अत्यधिक उत्साही राष्ट्रवादियों का एक दल तैयार किया जो बाद में कई दशकों तक राष्ट्रीय आंदोलन तथा बाद में पंजाब और देश के अन्य भागों में वामपन्थी तथा किसान आंदोलन तैयार करने में प्रमख भूमिका अदा की। यद्यपि दमन के फलस्वरूप उनमें से कई लोग स्थायी तौर पर और अन्य लोग कई वर्षों तक आंदोलन से अलग रहे।
गदर विचारधारा मूलतः अत्यंत समतावादी तथा जनतंत्रवादी थी। उनका उद्देश्य था हिन्दुस्तान में एक स्वतंत्र गणतंत्र की स्थापना करना। हरदयाल ने जो प्रारंभिक अवस्था में अराजकतावादी तथा श्रमिकसंघवादी आंदोलनों से प्रभावित हुए थे, इस आंदोलन को एक समतावादी स्वरूप प्रदान किया। वे अक्सर आयरिश, मैक्सिकन तथा रूसी क्रांतिकारियों का ज़िक्र किया करते थे जिसके कारण इस आंदोलन को अंधे राष्ट्रवाद से भी बचा सकें और उसे एक अन्तर्राष्ट्रीय रूप भी दे सकें।[20]

लेकिन गदर आंदोलन की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि यह थी कि उसके अधिकतर अनुयायी पंजाबी सिक्ख प्रवासियों में से होने के बावजूद उन्होंने कभी भी फिरकापरस्ती का इज़हार नहीं किया बल्कि वे अपने दृष्टिकोण में पूरी तरह धर्म-निरपेक्ष बने रहे। धर्म को महत्व देने को तुच्छ और संकीर्णता समझा जाता था जिसे क्रांतिकारी निन्दनीय समझते थे। वे खुले दिल से सिक्खों और पंजाबियों के सिवा दूसरों को भी नेता स्वीकार करते थे : हरदयाल हिन्दू थे, बर्कातल्लाह मसलमान थे, रास बिहारी बोस बंगाली हिन्दु थे। वे समस्त भारत के नेताओं का सम्मान करते थे-तिलक, सावरकर, खुदीराम बोस, तथा अरविन्द घोष उनके हीरो थे।

वे यह भी समझते थे कि सिक्खों को "लड़ाकू कौम" घोषित करने में उपनिवेशवादी शासन का हाथ था ताकि वे वफ़ादार सिपाही बने रहें। गदर दल ने इस मिथ्या छवि को भंग करने का भरसक प्रयत्न किया। उन्होंने बन्दे मातरम को आंदोलन के नारे के रूप में लोकप्रिय बनाया और सत श्री अकाल जैसे धार्मिक नारे को नहीं अपनाया। सोहन सिंह माखना, जो बाद में गदरी बाबा के नाम से प्रसिद्ध हुए और सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय एवं वामपंथी नेता बने, के अनुसार "हम सिक्ख या पंजाबी नहीं थे देशप्रेम ही हमारा धर्म था।"

IJIRSET

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 6, Issue 11, November 2017

कमज़ोरियाँ : गदर आंदोलन की अपनी कमजोरियाँ भी थीं जिनमें मुख्य थी आंदोलन के लिए तैयारी के स्तर को अधिक महत्व देना। कहा जा सकता है कि उन्होंने अपनी सेना की परिस्थितियों को पूरी तरह समझे बिना ही लड़ाई का बिगुल बजा दिया। प्रतिदिन नस्लवादी अपमान, अपरिचित परिस्थितियों में रहने के कारण आई विमखता की भावना आदि के । शिकार भारतीय प्रवासियों में राष्ट्रीय चेतना जगाने के उनके अभियान का जबर्दस्त प्रभाव पड़ा क्योंकि उनकी संख्या कम होने के कारण उन्हें संगठित करना बहुत आसान था और इसी से वे भ्रमित हो गये कि सारे भारत की जनता भी इस प्रकार तैयार थी।
उन्होने ब्रिटिश शासकों की ताकत, उनकी विचारधारा के प्रभाव का भी गलत अन्दाज़ लगाया और समझा के हिन्दस्तान की जनता को सिर्फ विद्रोह का नारा देने की जरूरत थी। इस महत्वपर्ण कमजोरी की जो कीमत गदर आंदोलन और समूचे राष्ट्रीय आंदोलन को चुकानी पड़ी वह काफी अधिक थी क्योंकि अगर गदर आंदोलन के नेतृत्व के एक बड़े भाग को शासन द्वारा कार्यक्षेत्र से अलग न किया जाता तो राष्ट्रीय आंदोलन का स्वरूप, विशेकर पंजाब में, कुछ और ही होता क्योंकि अपनी राष्ट्रवादी एवं धर्मनिरपेक्ष विचारधारा के कारण गदर दल ने उन फिरकापरस्त भावनाओं को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई होती जिन्होंने आने वाले वर्षों में अपना सिर उठाया।[19]
सरकार ने दमनचक्र से इन आंदोलनों को दबा दिया। लेकिन फिर भी ये आंदोलन ब्रिटिश विरोधी चेतना जगाने तथा उसे । बढ़ावा देने में सफल हुए। लेकिन उनकी सबसे बड़ी कमज़ोरी जनता से अलगाव था।

18 फरवरी को ही लाहौर के मोची दरवाजे पर इकट्ठे क्रांतिकारियों को पुलिस ने छापा मारकर गिरफ्तार कर लिया। 19 फरवरी को सरकार ने उन सभी छावनियों पर बड़े पैमाने पर पुलिस की तैनाती और चौकसी को बढ़ा दिया, जहां गदर होने की संभावना थी। फिरोजपुर छावनी में जिन सैनिकों ने मैगजीन की चाबियां क्रांतिकारियों के सौंपने की बात कही थी, उन्हें सुबह ही नौकरी से बर्खास्त कर दिया गया। भारत की आजादी में गदर पार्टी की भूमिका:

यही पाओगे महशर में जबां मेरी बयां मेरा,

मैं बंदा हिन्द वालों का हूं, है हिन्दुसतां मेरा।

मैं हिंदी, ठेठ हिंदी, खून हिंदी, जात हिंदी हूं,

यही मजहब, यही फिरका, यही है खानदां मेरा।

तेरी खिदमत में ऐ भारत, यह सिर जाए, जां जाए,

तो समझूंगा, यह मरना हयाते जादवा मेरा।[18]

कविता की ये पंक्तियां कर्तार सिंह सराभा की रचना है। एक तरह से गदर पार्टी के उद्देश्यों को इन पंक्तियों में व्यक्त कर दिया है। कर्तार सिंह सराभा को19 साल की उम्र में लाहौर षडयंत्र मामले में 16 नवम्बर 1915 को फांसी की सजा दी गई। उनके साथ जिन अन्य शहीदों को फांसी की सजा दी गई उनके नाम हैं-

बख्शीश सिंह (अमृतसर), हरनाम सिंह (स्यालकोट), जगत सिंह(लाहौर), सुरैण सिंह-1, सुरैण-2 (अमृतसर) और विष्णु गणेश पिंगले पूना (महाराष्ट्र) हैं।

15 जुलाई 1915 में अमेरिका के सैनफ्रांसिस्को नगर में गदर पार्टी की स्थापना हुई। सन् 1857 की क्रांति से प्रेरित 'गदर' से जुड़े क्रांतिकारियों का उदेश्य था भारत को ब्रिटिश हुकूमत से सशत्र विद्रोह के जरिए मुक्त करना। इस योजना के तहत 21 फरवरी 1915 को ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ विद्रोह की तारीख तय किया गया। पर कहा जाता है न कि घर का भेदी लंका ढ़ावे, यहीं अंजाम विद्रोह की इस योजना का हुआ। कृपाल सिंह नाम के पुलिस के भेदिए ने इस तारीख की सूचना पहले ही पुलिस को दे दी। इसकी भनक गदरी क्रांतिकारियों हो गई। इस वजह से विद्रोह की तारीख दो दिन पूर्व करना पड़ा।

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 6, Issue 11, November 2017

इस तारीख की खबर भी कृपाल सिंह ने पुलिस को दी। पूर्व योजना के मुताबिक 15 फरवरी को गदर को अंजाम देने के लिए क्रांतिकारियों को अपने -अपने कार्य क्षेत्रों में रवाना होना था। बंगाल के अनुशीलन समिति से जुड़े क्रांतिकारी-रासबिहारी बोस और सचिन सान्याल भी गदर की योजना से न सिर्फ जुड़ चुके थे, बल्कि 'गदर' योजना को अमलीजामा पहनाने के लिए हर तरह से मदद के साथ-साथ स्वयं भी प्राणपण से जुटे थे। रासबिहारी बोस ने यूपी और अंबाला का प्रबंध अपने हाथ में ले लिया। इस मोर्चे पर उन्होंने विष्णु गणेश पिंगले और सुच्चा सिंह को लगाया।[17]

निधान सिंह और डॉक्टर मथुरा सिंह झेलम रावलपिंडी सरहद की ओर गए। गुरमुख सिंह ललितो और हरनाम सिंह होती मरदान और झेलम की ओर और मुला सिंह को लाहौर पर हमला करने की जिम्मेदारी तय हुई। फिरोजपुर केंद्र की जिम्मेदारी खुद कर्तार सिंह सराभा संभाल रहे थे। कृपाल सिंह (जिसे निधान की सिफारिश पर पार्टी में शामिल किया गया।) हालांकि शक के दायरे में पहले ही आ चुका था। फिर भी पता नहीं कैसे मियांमीर छावनी (लाहौर) की जिम्मेदारी उसे सौपीं गयी। निधान सिंह ने उसे लाहौर रेलवे स्टेशन पर घूमते देखा। लाहौर की मियांमीर छावनी इस गदर योजना के केंद्र में था। इस छावनी में सैनिकों से संपर्क आसान था। इस मकसद से ही रास बिहारी बोस ने गदर पार्टी का मुख्यालय अमृतसर से लाहौर किया। 18 फरवरी को ही लाहौर के मोची दरवाजे पर इकट्ठे क्रांतिकारियों को पुलिस ने छापा मारकर गिरफ्तार कर लिया। 19 फरवरी को सरकार ने उन सभी छावनियों में बड़े पैमाने पर पुलिस की तैनाती और चौकसी बढ़ा दिया,जहां गदर होने की संभावना थी। फिरोजपुर छावनी में जिन सैनिकों ने मैगजीन की चाबियां क्रांतिकारियों के सौंपने की बात कही थी, उन्हें सुबह ही नौकरी से बर्खास्त कर दिया गया। फिर भी कर्तार सिंह सराभा ने दुस्साहस कर बैरक में जाकर देशी पलटन के हवलदारों से मुलाकात किया। उन्हें विद्रोह के लिए उकसाते रहे, पर पलटन के हवलदरों ने कुछ भी न कर पाने की अपनी विवशता बतायी। सराभा को भी आभास हो गया कि अब कहीं से कोई आशा नहीं बची है।

पंजाब में चारों तरफ से गिरफ्तारियां होने लगी। कर्तार सिंह सराभा, अर्जुन सिंह और हरनाम सिंह फिरोजपुर से लाहौर आ गये। रासबिहारी बोस को लाहौर से सुरक्षित बनारस की गाड़ी पर चढ़ा दिया गया। विष्णु गणेश पिंगले 23 मार्च को मेरठ छावनी में गिरफ्तार हो गए। उस समय पिंगले के पास से काफी मात्रा में हथियार और गदरी साहित्य बरामद हुआ।[16]

शहादत के लिहाज से देखा जाए तो गदर आंदोलन में 150 क्रांतिकारियों को फांसी दी गई अथवा वे पुलिस की मुठभेड़ में मारे गए। लगभग 300 क्रांतिकारियों को उम्र कैद की सजा दी गई। पंजाब में तीन हजार से अधिक गदर क्रांतिकारियों को पंजाब की चौहदी में नज़रबंद किया गया। कार्ययोजना के लिहाज से गदर आंदोलन 1857 की विद्रोह से प्रेरित था।

निष्कर्ष

मार्च 1913 में लाला हरदयाल ने घोषित किया कि देश मे 1857 के गदर की तर्ज पर एक और गदर की जरूरत है। उनके सुझाव पर ही पार्टी के मुख्यपत्र का नाम 'गदर' और सैनफ्रांसिस्को में पार्टी के मुख्य कार्यालय का नाम बंगाल के क्रांतिकारी अखबार और संगठन 'युगांतर' के नाम पर 'युगांतर आश्रम' रखा गया। इस युगांतर आश्रम से ही जुलाई 1914 में प्रथम विश्वयुद्ध शुरू होने के बाद ग़दर पार्टी के क्रांतिकरियों ने ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विरुद्ध अपने देश में सशस्त्र विद्रोह का एलान किया। कोई गुपचुप तरीके से नहीं, अपने विद्रोह की योजना को बाकायदा 5अगस्त 1914 को 'गदर' अखबार में छापा भी गया।

इस आंदोलन को भले ही आंशिक सफलता मिली। पर कुल मिलाकर गदर आंदोलन अपने चरित्र में राष्ट्रीय विस्तार में अंतरराष्ट्रीय (दुनिया के कई देशों में इसके केंद्र थे) और अपने अंतर्वस्तु में 1857 की प्रेरणा से प्रेरित था। गदर पार्टी के पहले अध्यक्ष सोहन सिंह भकना का संस्मरण मिलता है। कर्तार सिंह सराभा ने जेल की दीवारों पर लिखा था कि- शहीदों का खून व्यर्थ नहीं जाता।[20]

सोहन सिंह ने पूछा कि - यहां तो हड्डियां जेल में गल जाती है। खबर बाहर कैसे जाएगी? सराभा का उत्तर था-' अध्यक्ष जी,आज नहीं तो कल या परसों बाहर जाकर खून रंग लाएगा ही'।[21]

पंजाब के इस वीर सपूत की भविष्यवाणी सच साबित हुई। पंजाब की जमीन से ही सरदार भगतसिंह पैदा हुए। वे कर्तार सिंह सराभा

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 6, Issue 11, November 2017

का चित्र बराबर अपनी जेब में रखते थे। 23 साल की उम्र में उन्हें भी फांसी पर लटका दिया गया। लुधियाना के पास कर्तार सिंह सराभा के घर पर आज भी गदर पार्टी का झंडा फहर रहा है।[22]

संदर्भ

1) गदर आन्दोलन 1912
2) स्वतंत्रता आंदोलन और प्रवासी भारतीय (भारतीय पक्ष)
3) हम भूल गए सौ साल पहले बनी गदर पार्टी को, जिसने देश को आज़ादी दिलाई (हिन्दी मिडिया)
4) गदर आन्दोलन की गौरवशाली साम्राज्यवाद विरोधी विरासत को बुलन्द करें! (संग्रामी लहर)
5) The Hindustan Ghadar Collection (Bancroft Library, University of California, Berkeley)
6) गदर आंदोलन : एक प्रबल प्रेरणा (सीताराम येचुरी)
7) "Netaji Research Bureau". www.netaji.org.
8) ↑ Fay 1993, पृष्ठ viii
9) ↑ Sarkar 1983, पृष्ठ 420
10) ↑ Fay 1993, पृष्ठ 228
11) ↑ "Subhas Chandra Bose in Nazi Germany". Sisir K. Majumdar. South Asia Forum Quarterly. 1997. पपृ° 10–14. मूल से 8 अगस्त 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2011-08-12.
12) ↑ "Total Mobilisation". National Archives of Singapore. मूल से 29 अगस्त 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2011-08-12.
13) ↑ क्रान्त, मदनलाल वर्मा (2006). स्वाधीनता संग्राम के क्रान्तिकारी साहित्य का इतिहास. 2 (1 संस्करण). नई दिल्ली: प्रवीण प्रकाशन. पृ° 512. आई°ऍस°बी°ऍन° 81-7783-120-8. मूल से 14 अक्तूबर 2013 को पुरालेखित. मैं जानता हूँ कि ब्रिटिश सरकार भारत की स्वाधीनता की माँग कभी स्वीकार नहीं करेगी। मैं इस बात का कायल हो चुका हूँ कि यदि हमें आज़ादी चाहिये तो हमें खून के दरिया से गुजरने को तैयार रहना चाहिये। अगर मुझे उम्मीद होती कि आज़ादी पाने का एक और सुनहरा मौका अपनी जिन्दगी में हमें मिलेगा तो मैं शायद घर छोड़ता ही नहीं। मैंने जो कुछ किया है अपने देश के लिये किया है। विश्व में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ाने और भारत की स्वाधीनता के लक्ष्य के निकट पहुँचने के लिये किया है। भारत की स्वाधीनता की आखिरी लड़ाई शुरू हो चुकी है। आज़ाद हिन्द फौज़ के सैनिक भारत की भूमि पर सफलतापूर्वक लड़ रहे हैं। हे राष्ट्रपिता! भारत की स्वाधीनता के इस पावन युद्ध में हम आपका आशीर्वाद और शुभ कामनायें चाहते हैं।
14) ↑ Belle 2014, पृष्ठ 199
15) ↑ "Historical Journey of the Indian National Army". National Archives of Singapore. मूल से 16 मई 2007 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2007-07-07.
16) ↑ Fay 1993, पृष्ठ 556
17) ↑ "INA War Memorial in Singapore". National Archives of Singapore (S1942.org.sg). मूल से 10 अप्रैल 2007 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 14 अक्टूबर 2013.
18) ↑ "Heritage Sites and Trails in Singapore". National Heritage Board of Singapore. मूल से 28 सितंबर 2007 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2007-07-07.
19) Echoes of Freedom: South Asian pioneers in California 1899-1965. University of California, Berkeley. Bancroft Library.
20) Hoover, Karl (1985), The Hindu Conspiracy in California, 1913-1918. German Studies Review, Vol. 8, No. 2. (May, 1985), pp. 245-261, German Studies Association, आइ°एस°एस°एन° 0149-7952.
21) Brown, Giles (1948), The Hindu Conspiracy, 1914-1917.The Pacific Historical Review, Vol. 17, No. 3. (Aug., 1948), pp. 299-310, University of California Press, आइ°एस°एस°एन° 0030-8684.
22) Puri, Harish K (1980), Revolutionary Organization: A Study of the Ghadar Movement. Social Scientist, Vol. 9, No. 2/3. (Sep. - Oct., 1980), pp. 53-66, Social Scientist, आइ°एस°एस°एन° 0970-0293.